पाठ 10

भक्ति के पद

(प्रस्तुत पदों में मीरा और रसखान ने कृष्ण के प्रति अपनी अनन्य भक्ति तथा दर्शन की उत्कट लालसा प्रकट की है ।)

मीराबाई

हरि ! तुम हरो जन की भीर
द्रोपदी की लाज राखी, तुम बढ़ायो चीर ।

भक्त कारण रूप नरहरी धरयो आप सरीर ।
हिरणकश्यप मार लीनो, धरयो नाहिन धीर।
ढूंढते गज ग्राह मारयो, कियो बाहर नीर
दासी मीरा लाल गिरधर दुख जहां-तहां पीर।

पग घुंघरू बांध मीरा नाची, रे |
मैं तो अपने नारायण की, आपहि हो गई दासी रे।
विष का प्याला राणा जी ने भेज्यो, पीबत मीरा हांसी रे ।
लोग कहे मीरा भई बावरी, बाप कहे कुल नासी रे ।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर, हरिचरणा की दासी रे ।

कृष्ण भक्ति शाखा की प्रमुख कवयित्री मीराबाई का जन्म सन् 1498 ई. को राजस्थान के चोकड़ी (कुड़की) नामक गांव में हुआ माना गया है | इनकी रचनाओं में कृष्ण भक्ति के विविध रूप मिलते हैं | 'नरसी जी का मायरा', 'गीत गोविंद टीका', 'राग गोविंद' आपके प्रमुख ग्रंथ हैं |

रसखान के भक्ति पद

1. बैन वही उनको गुन गाई औ कान वही उन बैन सों सानी।

हाथ वही उन गात सरै अरु पाइ वही जु उही अनुजानी।।

जान वही उन प्रान के संग औ मान वही जु करै मनमानी।

त्यांै रसखानि वही रसखानि जु हैं रसखानि सो है रसखानि।।

2. या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूँ पुर को तजि डारों।

आठहुँ सिद्धि नवहुँ निधि को सुख नन्द की गाइ चराइ बिसारों।।

रसखानि कबौं इन आँखिन सो ब्रज के बन बाग तड़ाग निहारों।

कोटिक हौ कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारों।।

रसखान कृष्ण भक्ति के प्रसिद्ध कवि हैं। इनका जन्म 1548 ई0 के लगभग हुआ था। इनका नाम सैयद इब्राहिम था। इन्होने रसखान नाम से कविताएँ लिखी हैं। इनकी प्रसिद्ध रचना ‘सुजान रसखान’ और प्रेम ‘वाटिका’ है। इनका निधन सन् 1628 ई0 के लगभग माना जाता है।

शब्दार्थ

भीर=विपत्ति, दुःख। चीर=साड़ी। नरहरि=नृसिंह। बूडत= डूबते। नारायण=भगवान, कृष्ण। बावरी=पागल। नासी=नष्ट करने वाली। चरणा=पैर, चरण। बैन=वाणी। सानी=सुनते हैं। (जो भगवान की वाणी सुनते है।) अनुजानी=अनुसरण करते है। लकुटी=लाठी। कामरिया=कम्बल। तिहूपुर=त्रैलोक्य (स्वर्ग,मत्र्य,पाताल)। तड़ाग=तालाब। कलधौत=स्वर्ण।

प्रश्न अभ्यास

कुछ करने को

(क) कुछ भक्ति काल के कवियों के नाम और उनकी रचनाएं लिखिए।

(ख) मीराबाई का एकतारा (वाद्ययंत्र) लिए हुए चित्र बनाइए।

कविता से

1. मीरा प्रभु से क्या प्रार्थना कर रही है ?

2- द्रौपदी की सहायता ईश्वर द्वारा किस प्रकार की गई ?

3- कवि रसखान ने वाणी की क्या विशेषता बताई है ?

4- कवि रसखान ने तीनों लोको के राज्य को कृष्ण की किन वस्तुओं से तुच्छ कहा है ?

5- त्यौ रसखानि वही रसखानि जु हंै रसखानि सो है रसखानि पक्ति का आशय है- ‘‘भगवान श्री कृष्ण ऐसे हैं जो अपने भक्तों को कभी भी नाराज नहीं करते हैं और उनसे बहुत प्रेम करते हैं। वह तो आनन्द की खान हंै, उनसे नाता जोड़ने मे सुख ही सुख है। इसी प्रकार आप निम्नांकित पक्तियों के आशय स्पष्ट कीजिए-

(क) कोटिक हौ कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारों।

(ख) जान वही उन प्रान के संग औ मान वही जु करै मनमानी।

6- नीचे दिए गए भावांे से मिलती जुलती पंक्ति लिखिए-

(अ) कान वही अच्छे हैं, जो हर पल भगवान श्री कृष्ण की वाणी सुनते हैं।

(ब) भक्त की रक्षा करने के लिए आप (ईश्वर) ने नरसिंह का रूप धारण किया।

भाषा की बात

1. वर्णों के ऊपर लगे बिंदु(ं) को अनुस्वार तथा चन्द्र बिंदु(ँ) को अनुनासिक कहते हैं। अनुस्वार का प्रयोग क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग, तथा प वर्ग, के पाँचवे वर्ण के स्थान पर किया जाता है।

बिन्दु (ं) या चन्द्र बिंदु (ँ) लगाकर शब्दों लिखिए-

आख- गाव- मुह- पाच-

गगा- गदा- कपन- चचल-

2. पढ़िए समझिए और कुछ अन्य शब्द लिखिए-

र्- (गर्मी) - - -द्र (द्रुम) - - ट्र (ट्रक) -

3. दिए गए शब्दों के मानक रूप लिखिए-

सरीर, लाज, प्रान, आपनो, गुन

4. ब्रजभाषा के शब्द - बैन, सानी, गत, उही, करै, अरू, को खड़ी बोली हिन्दी के रूप में लिखिए

इसे भी जानें

आठहुँ सिद्धि-(आठ सिद्धियाँ)- अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व। नवहुँ निधि-(नौ निधियाँ)- पद्म निधि, महापदम् निधि, शंख निधि, मकर निधि, कच्छप निधि, मुकुन्द निधि, नन्द निधि, नील निधि, खर्व निधि। 'रसखान ''सवैया छन्द में कृष्ण लीला का गान करने वाले प्रथम कवि है।'